National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 295-297

जयशंकर प्रसाद कृत 'आंसू' विरह काव्य में विप्रलम्भ श्रृंगार की कामदशाओं का विधान

नीलम कुमारी
शोधार्थी (हिन्दी–विभाग) एम. डी. यू. रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

आंसू मूलतः एक विरह काव्य है जिसमें कवि ने एक बिरही युवा हृदय की विरह वेदना को अत्यन्त संजीव, सरस और भावपूर्ण शैली में व्यक्त किया गया है। आंसू हिन्दी के छायावादी काव्य के एक ऐसे कीर्तिमय स्तम्भ के रूप में है जिसकी आभा आज भी उतनी ही गरिमामय और महिमापूर्ण बनी हुई है। जितनी कि दूसरे प्रथम प्रकाशन के समय रही थी। कतिपय आलोचकों ने आंसू में अध्यात्म अथवा छायावाद को ढूंढने का प्रयास किया किन्तु सच यह है कि आंसू में बिरही मन की वेदना को कवि ने इतनी खूबी के साथ वर्णित किया है कि उसे किसी साहित्यिक वाद के घेरे में बांधने की लेशमात्र भी आवश्यकता नही है। हिन्दी के महान आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आंसू के विरह वर्णन की प्रशंसा करते हुए एक स्थल पर कहा है कि अभिव्यंजना की प्रगल्भता और विचित्रता के भीतर प्रेमवेदना की दिव्य विभूति का, विश्व के मंगलमय प्रभाव का सुख और दुख दोनों को अपनाने की उसकी अपार शक्ति का और उसकी छाया में सौन्दर्य और मंगल के संगम का भी आभास पाया जाता है। आंसू के सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल के उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि आंसू केवल विरही मन की तड़पन अथवा छटपटाहट की अभिव्यक्ति नही है अपितु उसके भीतर लोकमंगल की पावनी भावना भी अनुस्यूत है। इसी संदर्भ में आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी का यह कथन भी उल्लेखनीय है कि हिन्दी में इसकी गणना थोड़ी सी उत्कृष्ट रचनाओं में की जा सकती है। आधुनिक हिन्दी में जो थोड़े से प्रथम श्रेणी के विरह गीत हैं, उनमें आंसू की भावना सकंलन श्रेष्ठ होने के कारण वही उत्तम गीत है। आंसू के अध्यात्म और छायावाद आदि का नाम लेकर उसे जटिल बना देने के पहले उसको उसके प्रकृत रूप में देखना चाहिए। विरह का इतना मार्मिक वर्णन करने वाले कवि को किसी वाद की छाया लेने की जरूरत नही–उसकी उच्चता स्वतः सिद्ध है।

हिन्दी काव्य में विरह वर्णन की परम्परा काफी पुरानी कही जा सकती है। विशेष रूप से रीतिकालीन कविता में इस प्रकार का वर्णन प्रचुर मात्रा में मिलता है। तथापि उस वर्णन में अध्यात्मिकता की प्रमुखता है और कदाचित इसी कारण रीतिकालीन विरह काव्य पाठक के मन को नही छू पाता। इसके विपरीत आंसू का विरह–वर्णन अन्तकरण की सम्पूर्ण भावनाओं को अपने भीतर संजोए हुए हैं और इस कारण वह आज भी पाठक के मन को झझकोरने की क्षमता रखता है। एक विद्वान आलोचक के शब्दों में आंसू के प्रत्येक पृष्ठ पर विकल वेदना सुख को ललकार रही है दृगजल को ईंधन बनाकर शीतल ज्वाला जल रही है, अभिलाषाएं करवटें बदल रही है, सुप्त व्यथाएं फिर से जाग रही है, मधुर प्रेम की पीड़ा हृदय को हिला रही है, करूणा एक कोने में बैठी बैठी रो रही है और विरही का हृदय समाधि बन गया है। यही नही प्रस्तुत खण्ड काव्य मे विरही मन की घनीभूत पीड़ा दुर्दिन में आंसू बनाकर प्रवाहित हो रही है, विरहदग्ध मन रो–रोकर अपनी व्यथा का वर्णन कर रहा है और एक प्रेमी है जो निरन्तर उसकी उपेक्षा किए जा रहा है।

जो घनीभूत पीड़ा थी,
मस्तक में स्मृति सी छायी।
दुर्दिन में आंसू बनकर,
वह आज बरसने आयी
तथा।
रो रोकर सिसक–सिसक कर,
कहता मैं करूण कहानी।
तुम सुमन नोचते सुनते,
करते जानी अनजानी।

आंसू के विरही को प्रिय का वियोग ही नही, प्रकृति का कण कण भी साल रहा है। आकाश पर घिरती घनघोर घटाएं जब उसे श्रृंगार की उददीपक नही अपितु प्रलय की घटाओं सरीखी प्रतीत होती है। स्वाभावतः विरह के इन क्रूर क्षणों में उसे प्रिय के साथ बिताए गए संयोग के मधुर दिनों की सुखद स्मृतियां आ घेरती हैं। विरहदग्ध हृदय को अतीत की मधुर स्मृतियों में खो जाने से एक त्राण सा–मिल जाता है जीने का एक सहारा मिल जाता है, निराशा में आशा की किरण फूट पड़ती है। आंसू के विरही को प्रेमी से मिलते ही मानों सब कुछ मिल जाता है और वह मिलन के आवेगमय क्षणों में अपनी चेतना तक खो बैठता है। चेतना के लौटने पर उसका दुःख और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि तब तक उसका प्रेमी उसे छोड़कर पुनः कहीं और जा चुका होता है। मिलन के क्षण तो वैसे भी गिने चुने होते हैं। विरही को पुनः वही निराशा, वेदना, विरहजन्य पीड़ा आ घेरती है। उसे ध्यान आता है कि इसी प्रेम वेदना ने कभी उसके लिए सुखमय संसार जुटा दिया था, प्रेम के मोहपाश में फंसकर वह सब कुछ भूल गया था और आज वही प्रेम वेदना है जो उसे ही नही उसके आसपास के समूचे वातावरण को विषाक्त किए हुए हैं। विरही की वेदना अपरिमित हो गई है अखिल ब्रहमाण्ड में चेतन–अचेतन कोई भी ऐसा पदार्थ नही बच पाया है जिसमें वेदना व्याप्त न हो। विरही को लगता है कि उसकी वेदना केवल उसी को नही अपितु सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो गई है। फलतः विरही अपने आंसुओं के सहारे अखिल विश्व को शांति और शीतलता प्रदान करना चाहता है। कवि चाहता है कि उसकी प्रेम वेदना आंसू बन कर ओस की बूंदों की तरह समस्त दुखी प्राणियों पर बरसे। उसका दृढ़ विश्वास है कि यदि सारे संसार में प्रेम वेदना में उत्पन्न आंसुओं की वृष्टि होगी तो अखिल सृष्टि के भीतर प्रेम की पीर समा जाएगी और फिर कोई भी किसी के प्रति निष्ठुर अथवा कठिन नही हो पाएगा। सारी सृष्टि आनन्दविभोर हो जाएगी, सर्वत्र प्रेम जन्य आत्मीयता का प्रसार हो जाएगा कवि के

शब्दों में:–

सबका निचोड़ लेकर तुम,
सुख से सूखे जीवन में।
अरसों प्रभावत हिमकन–सा,
आंसू इस विश्व सदन में।

काव्यशास्त्रीय दृष्टि में विप्रलम्भ श्रृंगार की दस कामदशाओं का विधान है। विद्वानों ने इन दस कामदशाओं के नाम इस प्रकार बताए हैं: अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, जन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण।
जहां तक आंसू काव्य में वर्णित विप्रलम्भ श्रृंगार का प्रश्न है उसमें इन सभी कामदशाओं का चित्रण मिलता है। जब कभी विरही अपने प्रेमी के कल्याण सुख सुविधा के लिए मन ही मन कामना करता है तो उसकी यह कामना भारतीय शब्दावली में अभिलाषा नामक कामदशा की परिचायक होती है। इस दृष्टि से आंसू काव्य की निम्न पंक्तियां देखिए जिनमें बिरही के मन की ऐसी ही कामना के दर्शन होते हैं:–

हे जन्म जन्म के जीवन साथी संसृति के दुख में,
पावन प्रभात ही जावे जाणी आलस के सुख में।
जगती का कलुश अपावन तेरी विदग्धता पावे,
फिर निखर उठे निर्मलता वह पाप पुष्प ही जावे।

चिन्ता विरही मन की एक स्वाभाविक क्रिया है। प्रिय के वियोग में विरही नाना प्रकार की चिन्ताओं से घिरा रहता है। प्रस्तुत पंक्तियों में इसी प्रकार की चिन्ता के दर्शन होते हैं।

हीरे–सा हृदय हमारा कुचला शिरोष कोमल ने,
हिम शीतल अपणा बन अब समा विरह से जलने।

वियोग के दुःखद क्षणों में विरही का मन मधुर स्मृतियों में खो जाता है। जब–जब उसे प्रिय का विरह कचोटता है, तब तक वह मिलन की सुखद स्मृतियों में खो जाता है जहां उसके विरहदग्ध हृदय को त्राण मिलता है। मिलन की मधुर स्मृतियां विरहजन्य पीड़ा को शमित कर देती है। आंसू की निम्न पंक्तियों में स्मृति नामक यही काम दशा परिलक्षित होती है:–

बस गई एक बस्ती है स्मृतियों की इसी हृदय में,
नक्षत्र लोक फैला है जैसे इस नील निलय में।
ये सब स्फुलिंग है मेरी इस ज्वालामयी जल के,
कुछ चिन्ह है केवल मेरे इस महामिलन के।

विप्रलम्भ श्रृंगार की एक अन्य कामदशा गुणकथन होती है जिसमें विरही मन प्रिय के उन गुणों को याद करता है जिनसे वह सर्वाधिक प्रभावित रहा हो। प्रिय के वियोग में विरही को स्वभावतः उसके सुन्दर गुणों की याद हो आती है और वह बार–बार उन्ही का कथन करता रहता है। इस दृष्टि से आंसू नामक काव्य की निम्न पंक्तियां दृष्टव्य है जिनमें विरही प्रिय के गुणों का कथन कर रहा है।

पतझड़ था, झाड़ खड़े थे, सूखी सी फुलवारी में
किसलय नव कुसुम बिछाकर आए तुम इस क्यारी में।
शशिमहल पर घूंघट डाले, अंचल में दीप छिपाए
जीवन की गोधूली में कौतुहल में तुम आए।

कभी–कभी विरही मन निराशा और हताशा के कारण अत्यधिक व्यग्र हो उठता है, उसका दुखी हृदय आहें भरने लगता है, उसकी पीड़ा उसे बुरी तरह झकझोर देती है। जिससे वह उद्विग्न हो उठता है। विरही मन की इस मनस्थिति को शास्त्रीय भाषा में उद्वेग कहते हैं। आंसू की निम्न पंक्तियों में यह उद्वेग व्यक्त हुआ है।

हीरे–सा हृदय हमारा कुचला विशेष कोमल ने
हिम शीतल प्रणय अनल बन अब लगा बिरह में जलने।
तथा
जल उठा स्नेह दीपक–सा नवजीत हृदय था मेरा,
अवशेष घूम रखा से चित्रित कर रहा अंधेरा।

विप्रलम्भ श्रृंगार की एक अन्य कामदशा प्रलाप होती है जिसका आशय विरहजन्य रोदन से होता है। विरहजन्य पीड़ा की अतिशयता के कारण विरही का हृदय रो–रो उठता है। विरही मन के इसी रोदन को प्रलाप कहते हैं। आंसू की निम्न पंक्तियां इसी प्रलाप की द्योतक है:–

नाविक! इस सूने तट पर किन लहरों में खे लाया,
इस बीहड़ वेला में क्या अब तक या कोई आया?
उस पार कहां फिर जाऊं तम के मलीन अंचल में
जीवन का लोभ नही यह वेदना छमदमय छल में।

विरहजन्य वेदना की अतिशयता कभी कभी विरही मन में उन्मान की–सी स्थिति उत्पन्न कर देती है। ऐसी मन स्थिति में विरहीमन को अपनी प्रकृत स्थिति का भी बोध नही रह पाता और उसका आचरण पागलपन की सीमा तक पहुंच जाता है। विरही मन की इसी मनस्थिति को उन्माद की स्थिति कहते हैं जिनकी पहचान आंसू की निम्न पंक्तियों में ढूंढी जा सकती है।

इतना सुख ले पल भर में जलवन के अस्तस्थल से
तुम खिलक गए धीरे से रोते अब प्राण विकलसे
क्यों छलक रहा दुख मेरा ऊषा की मृदु पलकों में
हां उलझ रहा सब मेरा संध्या की धन अलकों में।

विरहीमन की बेचैनी व्यग्रता की स्थिति को व्याधि कहते हैं। विरह जन्य वेदना सहन करते करते विरहीमन टूट जाता है, उसे कहीं भी आशा की धूमिल–सी किरण भी नही दिखाई देती। मन के भीतर की इसी व्यग्रता तथा छटपटाहट को व्याधि कहते हैं। आंसू की निम्न पंक्तियों में इसी काम दशा का वर्णन मिलता है।

अभिलाषाओं की करवट फिर सुप्तव्यथा का जगना
सुख का अपना हो जाना भोगी पलकों का लगना
इस हृदय कमल का घिरना अलि अलकों की उलझन में
आंसू मरंद का गिरना मिलना निश्वास पवन में।

जड़ता की स्थिति में बिरही व्यक्ति की चेतना जवाब दे चुकी होती है। रूप सौन्दर्य को देखकर वह ठगा –सा रह जाता है। एक प्रकार से वह मंत्रमुग्ध हो जाता है उसमें शक्ति और सामर्थ्य जैसी बातें नही रह जाती। जड़ता की इस मनःस्थिति का वर्णन आंसू की

निम्न पंक्तियों में हुआ है।

मैं अपलक इन नयनों से देखा करता उस छवि को
प्रतिभा डाले भर लाता कर देता दान सुकवि को
निझर–सा झिर–झिर करता माध्वी कुंज छाया में
चेतना बही जाती थी हो मंत्र मुग्ध माया में।

विरहजन्य वेदना का चरमरूप चेतनाशून्य में होता है जबकि विरही व्यक्ति का तन मन दोनों ही टूट जाते हैं। उसके अंर्तमन में न तो कोई भाव उदित होते हैं न कोई विचार ही प्रस्फुटित होते हैं। उसके भीतर स्पन्दन जैसी कोई बात नही रह पाती, वह सर्वथा निष्प्राण निर्जीव बन जाता है। वह पूरी तरह मरता भी नही है किन्तु उसकी गणना जीवितों में भी नही की जा सकती। आंसू की निम्न पंक्तियों में इसी मरण दशा का वर्णन किया गया हैः–

सुख आहत, शान्त उंमगे बेगार सांस ढोने में
यह ह्दय समाधि बना है रोती करूणा कोन में।

इस प्रकार आंसू काव्य में विप्रलभ श्रृंगार की सभी कामदशाओं का चित्रण देखा जा सकता है। कदाचित इसी कारण आंसू को विप्रलंभ श्रृंगार की एक अनुपम कृति कहा गया है।

सन्दर्भ सूचीं

1. आंसू काव्य की समीक्षा, डा0 कृष्णदेव अग्रवाल,
2. प्रसाद जीवन और साहित्य, प0 अम्बिका प्रसाद वाजपेयी
3. प्रसाद की काव्य–प्रतिभा, डा0 दुर्गाषंकर मिश्र
4. प्रसाद और उनकी कविता, श्री विषम्भर मानव
5. प्रसादः आंसू तथा अन्य कृतियां, डा0 विनयमोहन ष्षर्मा
6. कवि प्रसाद की काव्य साधना, श्री रामनाथ सुमन
7. प्रसाद जी की कला काव्य के रूप, आचार्य गुलाबराय